13_hilal_muslim_Layout 1 5/1/2014 4:03 PM Page 163

हिंदुत्व और हिंदुस्तानी मुसलमान

हिलाल अहमद

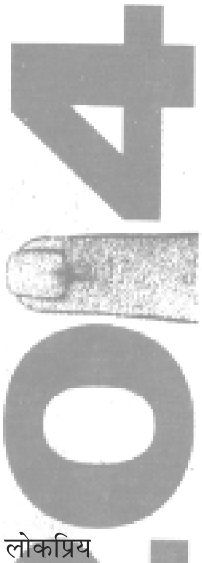

भारतीय राजनीति में मुसलमानों के राजनीतिक रुझानों को देखने-समझने का एक लोकप्रिय तरीक़ा प्रचलित है, जिसे थोड़ा 'मीडिया-फ्रेंडली' भी कहा जा सकता है। हमें अक्सर बताया जाता है कि मुसलमान समुदाय में एक ज़बरदस्त आंतरिक एकता है जिसके चलते सभी मुसलमान आम तौर पर किसी एक पार्टी के हक़ में मतदान करते हैं। समझा जाता है कि इसीलिए राजनीतिक दल मुसलमानों को लुभाने के तरीक़े खोजते रहते हैं और अक्सर पार्टी-घोषणापत्रों में मुसलमानों के कुछ निश्चित मुद्दे और माँगें पूरी करने के वायदे दर्ज रहते हैं। दूसरे शब्दों में कहें

13_hilal_muslim_Layout 1 5/1/2014 4:03 PM Page 164

यूँ तो भारतीय जनता पार्टी हिंदुत्व को अपनी विचारधारा का मूलतत्त्व मानती है, लेकिन पार्टी में ऐसे मुसलमान नेता हमेशा रहे हैं जिन्हें भाजपा कभी सच्चा राष्ट्रवादी मुसलमान बताती है तो कभी सच्चा सेकुलरवादी।

तो मुसलमानों का एक वोट बैंक है, जिसके दम पर भारत में सरकारें बनती और गिरती हैं।

हिंदुस्तानी मुसलमानों की सियासत की इस स्थापित कहानी में कुछ हीरो हैं और कुछ विलेन। गंगा-जमुनी तहज़ीब की दुहाई देने वाले कांग्रेसी, अपने को मुसलमानों के संवैधानिक अधिकारों का सबसे बड़ा रक्षक बताने वाले वाले वामपंथी दल, साम्प्रदायिकता से लड़ने वाले घोषित योद्धा मुलायम सिंह यादव और लालू यादव पार्टियाँ इस कहानी के हीरो कहे जा सकते हैं। ये दल 1990 के बाद से ही अपने को सेकुलर जमात बता रहे हैं, और हमें बार-बार याद दिलाया जाता है कि मुसलमानों की सबसे बड़ी दुश्मन भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) है। दूसरी ओर भाजपा इस आरोप का न तो खुले तौर पर विरोध करती है और न ही समर्थन। यूँ तो पार्टी हिंदुत्व को अपनी विचारधारा का मूलतत्त्व मानती है, लेकिन पार्टी में ऐसे मुसलमान नेता हमेशा रहे हैं जिन्हें भाजपा कभी सच्चा राष्ट्रवादी मुसलमान बताती है तो कभी सच्चा सेकुलरवादी।

इस लेख का उद्देश्य सेकुलरवाद बनाम साम्प्रदायिकता की कहानी को दोहराना क़तई नहीं है। बजाय इसके मैं मुसलमानों के राजनीतिक रुझानों का चरित्र समझना चाहता हूँ। इसके लिए ज़रूरी है कि हम मुसलमान समुदाय को उसकी सामाजिक-जातिगत विविधता में देखें, न कि एक वोट बैंक के रूप में। मेरा मानना है कि भाजपा और मुसलमानों के बीच के राजनीतिक रिश्ते इस संबंध में एक महत्त्वपूर्ण संदर्भ बिंदु हो सकते हैं। इस रिश्ते की व्यवस्थित पड़ताल न सिर्फ़ कई बुनियादी सवालों का जवाब तलाशने में कारगर हो सकती है, बल्कि इस विश्लेषण से हम भारतीय राजनीति, विशेषकर चुनावी राजनीति, की कुछ ऐसी जटिलताओं से भी परिचित हो सकते हैं जिनके लिए हमारे सार्वजनिक विमर्श में कोई स्थान नहीं है।

I

भाजपा और मुसलमानों के राजनीतिक संबंधों के बारे में अक्सर तीन तर्क दिये जाते हैं : पहला, भाजपा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से सम्बद्ध है। संघ एक घोषित हिंदुत्ववादी संगठन और कट्टर मुसलमान विरोधी है। इसलिए भाजपा बुनियादी तौर पर एक मुसलमान विरोधी राजनीतिक पार्टी है; दूसरा, भाजपा संविधान में वर्णित धार्मिक अल्पसंख्यकों के मौलिक अधिकारों का विरोध करती है। भाजपा के नेता आधिकारिक सेकुलरवाद को छद्म सेकुलरवाद कहते हैं और अल्पसंख्यकों को मिलने वाले किसी भी तरह के विशेषाधिकार को नैतिक और राजनीतिक दृष्टि से अनुचित मानते हैं; और तीसरा, भाजपा ने बाबरी मसजिद विध्वंस में अहम भूमिका निभाई है। गुजरात का 2002 का मुसलमान-विरोधी दंगा भी भाजपा के शासनकाल में हुआ था। इसलिए भाजपा का राजनीतिक चरित्र संदिग्ध है। ये तीनों तर्क बेबुनियाद नहीं हैं। भाजपा, और इससे पहले जनसंघ, एक भाषा-एक धर्म- एक राष्ट्र के दृष्टिकोण से भारत को हिंदू राष्ट्र-राज्य के रूप में परिभाषित करने के पक्षधर रहे हैं। अस्सी के दशक में पनपी हिंदू सम्प्रदाय-केंद्रित राजनीति की भी भाजपा के उत्थान में एक अहम भूमिका रही है। यह भी सही है कि भाजपा ही ने राम मंदिर आंदोलन को एक राजनीतिक मुद्दे में बदला जिसकी परिणति बाबरी मसजिद के विध्वंस में हुई। इन दलीलों से एक बड़ा निष्कर्ष निकाला जाता रहा है कि

भाजपा हिंदू साम्प्रदायिक पार्टी है और मुसलमान भाजपा को शक की नज़र से देखते हैं।

मेरा मत है कि मुसलामानों और भाजपा के समकालीन संबंधों की चर्चा करने के लिए हमें इन तर्कों और राजनीतिक तौर पर सही कहे जाने वाले स्थापित निष्कर्ष की परिधि से बाहर आना ज़रूरी है। हमें हिंदुस्तानी मुसलमानों को उनकी सामुदायिक-जातिगत विविधता के आईने में देखना होगा और भाजपा को एक पेशेवर राजनीतिक दल के रूप में ताकि बदलते राजनीतिक परिदृश्य को उसकी समग्रता में समझा जा सके।

भाजपा की सदस्यता मुसलमानों सहित भारत के सभी नागरिकों के लिए उपलब्ध है। भाजपा आधिकारिक तौर पर हिंदू राष्ट्र की अवधारणा से बचती है; पार्टी के तमाम दस्तावेज़ हिंदुत्व को किसी विशेष धर्म या सम्प्रदाय से अलग करने का आग्रह करते हुए नज़र आते हैं।

इस विषय में दो बेहद सीधे सवाल पूछे जाने की ज़रूरत है : (अ) भारत के मुसलमानों और उनकी कुछ विशिष्ट कही जाने वाली समस्याओं के विषय में भाजपा का आधिकारिक पक्ष क्या है? क्या इस विषय में क्षेत्रीय स्तर पर भाजपा और राष्ट्रीय भाजपा की विचारधारा में कोई अंतर है? (ब) भारत के मुसलमान भाजपा के विषय में क्या राय रखते हैं? क्या भाजपा मुसलमानों के लिए किसी भी तरह का राजनीतिक विकल्प बन कर उभरी है?

पहला प्रश्न आधिकारिक विचारधारा से जुड़ा हुआ है, जबकि दूसरा सवाल भाजपा की नीतियों और कार्यक्रमों की मुसलमानों के बीच स्वीकृति से संबंधित है। इन मुद्दों को गहराई से समझने के लिए मेरा मत है हमें राजनीतिक वक्तव्यों पर आधारित विश्लेषण पद्धति से ज़रा बचना होगा। इसके विपरीत हमें कुछ बेहद बुनियादी स्रोतों— भाजपा के द्वारा सार्वजनिक किये गये कुछ आधिकारिक दस्तावेज़ों, नेताओं के भाषणों, पार्टी की आधिकारिक वेबसाइट्स आदि के ज़रिये इस पार्टी के तौर पर नये सिरे से समझाना होगा। जहाँ तक मुसलमानों के आम नज़रिये की बात है हम सी.एस.डी.एस.-लोकनीति द्वारा किये गये राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन के आँकड़ों को विश्वसनीय प्रमाण मान सकते हैं। यही एक मात्र ऐसा सर्वेक्षण है जिसमें देश भर के मुसलमान मतदाताओं से भाजपा के बारे में सीधे सवाल पूछे गये है। (यहाँ यह बात स्पष्ट करना ज़रूरी है कि सर्वेक्षण अनुसंधान की उपलब्ध कई तकनीकों में से महज़ एक तकनीक है। इसे अंतिम सत्य न मान कर सत्य को समझने का एक उपयोगी ज़रिया मानना ज़रूरी है।) मैं यह भी साफ़ कर देना चाहता हूँ कि यह लेख महज़ एक संक्षिप्त टिप्पणी है जिसका मक़सद कुछ सवाल उठाना है ताकि भाजपा-मुसलमान रिश्ते पर एक सार्थक बहस हो सके। मेरा मत है जो प्रमाण मैंने इस लेख में दिये है वे सीमित हैं। इन प्रमाणों को उनकी सीमाओं के तहत देखना ही उचित होगा। इस विषय पर व्यवस्थित शोध होना अभी बाक़ी है।

II

भाजपा को एक राजनीतिक पार्टी के तौर पर समझने के लिए संघ परिवार कहे जाने वाले संगठनों के समुच्चय में उसकी विशिष्ट स्थिति समझना ज़रूरी है। यह सही है कि भाजपा संघ से वैचारिक और नीतिगत रूप से जुड़ी हुई है, लेकिन एक राष्ट्रीय दल के रूप में भाजपा की राजनीतिक ज़रूरतें थोड़ी अलग हैं। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद दबाव-समूह हैं जिनकी जवाबदेही उनकी अपनी क़तारों तक सीमित है। ये समूह अपनी सदस्यता केवल हिंदू धर्म मानने वालों के लिए सीमित

13_hilal_muslim_Layout 1 5/1/2014 4:03 PM Page 166

जब पार्टी की आधिकारिक नीति का सवाल आता है तब राम मंदिर का मुद्दा इतनी स्पष्टता से नहीं लाया जाता। यही स्थिति समान नागरिक संहिता पर है। यहाँ तक कि नरेंद्र मोदी द्वारा प्रतिपादित 'भारत की इंद्रधनुष शक्ति' के विचार में भी ये मुद्दे कहीं नज़र नहीं आते।

कर सकते हैं, खुले तौर पर भारत को हिंदू राष्ट्र घोषित करने कि माँग कर सकते है और धर्मिक अल्पसंख्यकों, ख़ास कर मुसलमानों, के लिए बनने वाली नीतियों को देश-विरोधी बता सकते हैं। लेकिन भाजपा आधिकारिक तौर पर ऐसा नहीं कर सकती। भाजपा को तकनीकी तौर पर चुनाव आयोग द्वारा स्थापित ढाँचे के भीतर रह कर ही राजनीति करनी पड़ती है। भाजपा की सदस्यता मुसलमानों सहित भारत के सभी नागरिकों के लिए उपलब्ध है। भाजपा आधिकारिक तौर पर हिंदू राष्ट्र की अवधारणा से बचती है; और यहाँ तक कि पार्टी के तमाम दस्तावेज़ हिंदुत्व को किसी विशेष धर्म या सम्प्रदाय से अलग करने का आग्रह करते हुए नज़र आते हैं।

साम्प्रदायिक हिंसा के समय भी भाजपा और संघ परिवार के अन्य घटकों के बयानों में एक बारीक़ फ़र्क़ देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए मुज़फ़्फ़रनगर के दंगों पर भाजपा द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में समाजवादी पार्टी और प्रशासनिक मशीनरी की विफलता को दंगों का मुख्य कारण बताया गया।[1] लेकिन विहिप का बयान बेहद उत्तेजक था। 'लव जेहाद' से हिंदू अस्मिता की रक्षा करने का संकल्प लेते हुए विहिप ने दावा किया कि :

> इस समस्त काण्ड से एक शिक्षा लेने की आवश्यकता है कि लव जेहादियों पर क़ानूनी रोक लगायी जाए और क़ानून का सख़्ती से पालन किया जाए। इस घटना में शामिल हत्यारे लव जेहादियों को कठोर दण्ड दिया जाए अन्यथा स्वाभिमानी हिंदू को इच्छा न होते हुए भी अपनी रक्षा अपने बल पर करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा, जो शर्मनाक है और क़ानून से बनी इस सरकार द्वारा सम्भव नहीं हो पा रही है।[2]

भाजपा और संघ के अन्य समूहों की कार्य शैली के इस बारीक़ फ़र्क़ के ज़रिये हम भाजपा की विचारधारा में मुसलमानों के स्थान का विश्लेषण कर सकते हैं। यहाँ इस बात का उल्लेख करना ज़रूरी है कि सैद्धांतिक तौर पर किसी भी पेशेवर राजनीतिक दल की विचारधारा का अर्थ किन्हीं स्थिर-अचल विचारों और मान्यताओं के समूह से नहीं होता। बल्कि विचारधारा से तात्पर्य उस अपरिभाषित वैचारिक मुद्रा से है जिसके ज़रिये सदैव बदलती परिस्थितियों में कुछ तयशुदा राजनीतिक बयान दिये जाते हैं। उदाहरण के लिए राम मंदिर पर भाजपा के रुख की बात की जा सकती है। पार्टी के वे नेता जो संघ से जुड़े हैं— अक्सर बयान देते हैं कि भाजपा राम मंदिर के निर्माण के लिए कटिबद्ध है। लेकिन जब पार्टी की आधिकारिक नीति का सवाल आता है तब राम मंदिर का मुद्दा इतनी स्पष्टता से नहीं लाया जाता। यही स्थिति समान नागरिक संहिता पर है। यहाँ तक कि नरेंद्र मोदी द्वारा प्रतिपादित 'भारत की इंद्रधनुष शक्ति' के विचार में भी ये मुद्दे कहीं नज़र नहीं आते। भाजपा की वेबसाइट कहती है :

> श्री नरेंद्र मोदी द्वारा सूत्रीकृत भारत की इंद्रधनुषी शक्ति के दायरे में सात केंद्रीय मुख्य बिंदु आते हैं जो भारतीय स्वतंत्रता के प्लेटिनम जुबली वर्ष 2022 तक ली गयी अधिकतर पहलक़दमियों की धुरी बनेंगे।

[1] http://bjp.org/images/ pdf_2013/press_h_dr_sudhanshuji_ sep _11_13.pdf, 19 सितम्बर, 2013 को देखा गया).

[2] प्रेस विज्ञप्ति : http://vhp.org/press-release; 19 सितम्बर, 2013 को देखा गया.

राम मंदिर पर सदैव रहने वाली अस्पष्टता के ज़रिये भाजपा न केवल अपनी राष्ट्रीय दल वाली छवि सर्वमान्य बना पाती है बल्कि गठजोड़ राजनीति के इस दौर में प्रादेशिक राजनीतिक ताकतों को अपनी ओर आकर्षित करने में भी सफल होती है।

> ये सात मुख्य बिंदु हैं ज्ञान, लोकतंत्र, प्राकृतिक संसाधन, कृषि, स्त्री-सशक्तीकरण, युवा-शक्ति और भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत। इन सभी सातों मुख्य बिंदुओं के इर्द-गिर्द विस्तृत कार्य-योजनाएँ बनाई गयी हैं और उन्हें स्मार्ट (एसएमएआरटी) (स्पेसिफ़िक यानी सुनिश्चित, मेज़रेबिल यानी मापयोग्य, एसाइनेबिल यानी लागू करने योग्य, रियलिस्टिक यानी यथार्थपरक और टाइम-बाउण्ड यानी समयबद्ध) मापदण्ड के मुताबिक़ विकसित किया गया है।[3]

इस का अर्थ यह नहीं निकलना चाहिए कि भाजपा के लिए राम मंदिर का कोई राजनीतिक औचित्य नहीं है। भाजपा के पुराने राष्ट्रीय चुनाव घोषणापत्र इस बात के गवाह हैं कि पार्टी ने एक समय राम मंदिर के मुद्दे को प्रमुख चुनावी माँग बनाया था। लेकिन यह भी सही है कि राम मंदिर का एजेण्डा कभी भी बीजेपी का एकमात्र राजनीतिक वायदा नहीं रहा है। यहाँ तक कि 1991 में जब पार्टी सक्रिय रूप से बाबरी मसजिद विवाद में लिप्त थी, उस समय भी उसका चुनाव घोषणापत्र एक अलग ज़ुबान बोल रहा था। तब पार्टी का नारा था : राम-आस्था-रोटी-जीवन।

अख़बारी ज़ुबान में इस तरह के पेचीदा सवालों को ढुलमुल राजनीति कह कर विमर्श का अंत कर दिया जाता है। मेरा मत है हमें इस ढुलमुल राजनीति के अलिखित नियमों को ध्यान से देखना होगा ताकि उन तर्कों को पहचाना जा सके जिसके ज़रिये राजनीतिक अभिजन अपने लिए सर्वमान्य स्वीकृति हासिल करते हैं। राम मंदिर पर सदैव रहने वाली अस्पष्टता के ज़रिये भाजपा न केवल अपनी राष्ट्रीय दल वाली छवि को सर्वमान्य बना पाती है बल्कि गठजोड़ राजनीति के इस दौर में प्रादेशिक राजनीतिक ताक़तों को अपनी ओर आकर्षित करने में भी सफल होती है।

महज़ राम मंदिर पर भाजपा की समझ के आईने में हमें मुसलमानों और उसके संबंधों को नहीं देखना चाहिए। बाबरी मसजिद न तो आज भारत के मुसलमान समुदायों का मुख्य मुद्दा है, न ही मुसलमान राजनीतिक समूहों का। इसके बरअक्स मुसलमानों का पिछड़ापन और आरक्षण प्रमुख मुसलमान मुद्दे के तौर पर उभरे हैं। दिलचस्प बात यह है कि इस विषय में भी भाजपा का रवैया काफ़ी मिला-जुला है।

आम तौर पर यह माना जाता है कि सच्चर आयोग मुसलमान आरक्षण की बात करने वाली पहली सरकारी रपट है। यह सही नहीं है। मुसलमान आरक्षण का सरकारी विमर्श काफ़ी पुराना है। मण्डल आयोग ने पहली बार ग़ैर-हिंदू धर्मों से जुड़े समुदायों की अन्य पिछड़े वर्ग संबंधी पहचान का एक फ़ार्मूला दिया था। भाजपा और राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठजोड़ (राजग) के कार्यकाल में संविधान के पुनरावलोकन के लिए बने आयोग (द नैशनल कमीशन टू रिव्यू द वर्किंग ऑफ़ द कांस्टीट्यूशन) ने यह विमर्श आगे बढ़ा कर पहली बार मुसलमान पिछड़ेपन को आरक्षण से जोड़ा था। कमीशन की अंतिम रिपोर्ट के 240वें सुझाव में यह साफ़ कहा गया है कि :

> इस समय स्थिति यह है कि विधायिकाओं में अल्पसंख्यक समुदायों, ख़ासकर मुसलमानों का राजनीतिक प्रतिनिधित्व जनसंख्या में उनके अनुपात से नीचे चला गया है। उनके भी भीतर पिछड़ी

[3] http://www.bjp.org/core-issues/rainbow-of-india.

13_hilal_muslim_Layout 1 5/1/2014 4:03 PM Page 168

> जातियों का प्रतिशत तो शून्य के बराबर ही है। यह हालत उनके भीतर बेगानगी का एहसास पैदा कर सकती है। इस प्रकार की परिस्थिति में यह सिफ़ारिश की जाती है कि राजनीतिक दल अल्पसंख्यक समुदायों में उनकी पिछड़ी जातियों, अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों समेत नेतृत्वकारी सम्भावनाओं की रचना करें ताकि उन्हें राजनीतिक जीवन के लिए तैयार किया जा सके। भारतीय राज्य तंत्र में बहुलतावाद को पुष्ट करने में राज्य की भूमिका को रेखांकित किया जाना आवश्यक है।
>
> धार्मिक अल्पसंख्यकों के पिछड़े वर्ग, जिनकी शिनाख़्त करके पिछड़े वर्गों की सूची में शामिल कर लिया गया है, वास्तव में इन अल्पसंख्यकों की आबादी के बहुलांश की रचना करते हैं। पिछड़े वर्गों का विकास करने के लिए किये जाने वाले प्रयासों के तहत हिंदू पिछड़े वर्गों के साथ ही उनका विकास करने के लिए विशेष ध्यान देना चाहिए। यह काम दसवीं योजना में पिछड़े वर्गों के तहत संदर्भित इन वर्गों के विकास और सशक्तीकरण के लिए बने कार्य दल द्वारा अख़्तियार किये गये रवैये के मुताबिक़ ही होना चाहिए।[4]

स्पष्ट है कि सच्चर कमीशन की सिफ़ारशों और एनसीआरडब्ल्यूसी द्वारा दिये गये सुझावों में कोई बुनियादी फ़र्क़ नहीं है। मज़ेदार बात यह है कि बीजेपी ने एनसीआरडब्ल्यूसी की रपट पर चुप्पी बनाए रखी है। लेकिन जब 2006 में सच्चर कमीशन की रिपोर्ट आयी तो पार्टी ने इसका जम कर विरोध किया। सबसे रोचक बयान सुषमा स्वराज का था। उन्होंने जहाँ एक ओर मुसलमानों की कुछ जातियों को आरक्षण दिये जाने कि सिफ़ारिश को धार्मिक पृथकतावाद के संदर्भ में परिभाषित किया; वहीं उन्होंने यह भी कहा कि सच्चर रिपोर्ट इस बात का प्रतीक है कि मुसलमानों की वर्तमान दशा के लिए कांग्रेस की तुष्टीकरण की नीति जिम्मेदार है।[5] यहाँ सवाल उठता है कि सच्चर कमीशन की पुरज़ोर मुख़ालफ़त करते हुए भी आख़िर क्यों भाजपा मुसलमानों के पिछड़ेपन को पूरी तरह से नज़अंदाज़ नहीं कर पाती?

हमें याद रखना होगा कि एक राजनीतिक दल के रूप में भाजपा दो तरह के वैचारिक समूहों का जमावड़ा है। एक ओर संघ से जुड़े नेता हैं जिनके लिए भाजपा संघ के राजनीतिक कार्यक्रम के लिए बनाया गया चुनावी संगठन है। तरुण विजय का लेखन इस तरह के नेताओं का प्रतिनिधित्व करता है। दूसरी ओर वे नेता हैं जिन्हें आम जुबान में आधुनिकतावादी कहा जा सकता है। ये नेता मूल रूप से भारत के विचार को युरोपीय राष्ट्र-राज्य के सिद्धांत के आईने में देखना चाहते हैं और किसी भी समूह को किसी भी तरह के विषेशाधिकार दिये जाने के घोर विरोधी हैं। पूर्व मंत्री जगमोहन भी इस श्रेणी में रखे जा सकते हैं। दिलचस्प बात यह है कि इन दोनों समूहों में पार्टी की सापेक्षिक स्वायत्तता को लेकर संघर्ष चलता रहता है। भाजपा की अस्पष्ट अपरिभाषित मुसलमान नीति भी इसी संघर्ष से निकलती है। इस तथ्य को एक अन्य उदाहरण से और अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

भाजपा के संविधान की धारा-4 कहती है :

> राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय एकात्मकता, लोकतंत्र, 'सामाजिक-आर्थिक विषयों पर गाँधीवादी दृष्टिकोण', जिससे शोषणमुक्त एवं समतायुक्त समाज की स्थापना हो सके, 'सकारात्मक पंथ-निरपेक्षता' अर्थात् सर्वधर्मसमभाव, मूल्यों पर आधारित राजनीति और आर्थिक और राजनीतिक विकेंद्रीकरण में पार्टी विश्वास करती है।

इस व्यापक दृष्टिकोण को स्पष्ट करने के लिए पार्टी आधिकारिक तौर पर दीनदयाल उपाध्याय के मशहूर एकात्म मानववाद सिद्धांत का सहारा लेती है। एकात्म मानववाद का शीराज़ा मूलत: उन चार भाषणों से बना हो जो उपाध्याय ने 1965 में दिये थे। ये चारों भाषण भाजपा की वेबसाइट पर

[4] http://lawmin.nic.in/ncrwc /finalreport/v1ch11.htm.

[5] http://www.hindustantimes.com/news-feed/nm20/sachar-committee-report-full-of-prejuducis-bjp /article1-179656.aspx.

13_hilal_muslim_Layout 1 5/1/2014 4:03 PM Page 169

मौजूद हैं। दिलचस्प बात यह है भाजपा की राष्ट्रीय वेबसाइट पर दिखने वाले भाषणों और गुजरात भाजपा की वेबसाइट पर दिखाये गये भाषणों में फ़र्क़ है। उपाध्याय के तीसरे लेक्चर का वह भाग जहाँ मुसलमानों की सामुदायिक पहचान का ज़िक्र है, गुजरात भाजपा की वेबसाइट पर उपलब्ध है, लेकिन यह हिस्सा राष्ट्रीय वेबसाइट[6] से ग़ायब है। भाषण का विवादास्पद हिस्सा यह है :

> एक बार श्री विनोबाजी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री गुरुजी के बीच बातचीत के दौरान सवाल उठा कि हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सोचने के तौर-तरीक़ों के बीच अंतर कहाँ है। गुरुजी ने विनोबाजी से कहा कि हर समाज में अच्छे और बुरे लोग होते हैं। हिंदुओं के बीच भी ईमानदार और अच्छे लोग मिल सकते हैं और मुसलमानों के बीच भी। इसी तरह दुष्ट भी दोनों समाजों में मिलते हैं। अच्छाई पर किसी ख़ास समाज का एकाधिकार नहीं है। लेकिन, यह ज़रूर देखा गया है कि हिंदू निजी जीवन में दुष्ट होते हुए भी सामूहिक रूप से हमेशा अच्छी बातों के बारे में ही सोचते हैं। दूसरी तरफ़ अगर दो मुसलमान एक साथ होते हैं तो ऐसे प्रस्ताव रखते हैं और उनसे सहमति व्यक्त करते हैं जो वे अपनी निजी हैसियत में सोच भी नहीं सकते। साथ-साथ आते ही वे बिल्कुल अलग तरह से सोचना शुरू कर देते हैं। यह एक रोज़मर्रा का अनुभव है। विनोबाजी ने माना कि इस अवलोकन में सच्चाई है, पर उनके पास इसकी कोई व्याख्या नहीं थी। अगर हम इस परिस्थिति का विश्लेषण करें तो पाएँगे कि एक व्यक्ति और समाज का चिंतन हमेशा अलग होता है। दोनों के बीच कोई गणितीय संबंध नहीं होता। अगर हज़ार अच्छे लोग एक जगह जमा हों तो भी यह नहीं कहा जा सकता कि एक उसी तरह से नेकी की बातों में सोचेंगे।[7]

इस उदाहरण से एक बात साफ़ है कि भाजपा अपनी राष्ट्रीय छवि को सीधे-सीधे मुसलमान विरोधी नहीं बनाना चाहती। लेकिन यह नियम क्षेत्रीय भाजपा इकाइयों पर लागू नहीं होता। यही कारण है कि राज्यों में कई बार भाजपा कुछ अप्रत्याशित क़दम उठाती दिखती है। मध्य प्रदेश की मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना इस संदर्भ में एक रोचक उदाहरण है। यह योजना राज्य के सभी धर्मों के वरिष्ठ नागरिकों के लिए उपलब्ध है जिसमें मुसलमान भी शामिल हैं ![8] योजना के तहत राज्य सरकार किसी भी धर्म के बुज़ुर्ग को भारत में उसकी पसंद की तीर्थयात्रा करें के लिए आर्थिक सहायता मुहैया कराती है। मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि भाजपा मुसलमानों के सवाल पर कोई सीधी मुद्रा अख़्तियार करने से बचती है, लेकिन एक राजनीतिक दल के रूप में भाजपा की यह अस्पष्टता राष्ट्रीय और प्रांतीय स्तर पर एक सी नहीं है।

III

हमारा दूसरा सवाल मुसलमानों के राजनीतिक रुझानों से संबंधित है। यहाँ इस तथ्य को रेखांकित करना ज़रूरी है कि भारत में कोई एक मुसलमान समुदाय नहीं है बल्कि वर्ग, जाति, प्रदेश, भाषा और यहाँ तक कि धर्म के आधार पर विभाजित असंख्य समुदाय अपने को मुसलमान मानते हैं। इन समुदायों की पहचान एक गतिमान पेंडुलम की तरह है जिसके एक सिरे पर इसलाम की विविध धार्मिक परम्पराएँ हैं तो दूसरे सिरे पर भाषा, जाति और प्रदेश जैसी बुनियादी अस्मिताएँ हैं। इसलिए जिन समस्याओं को मुसलमानों के मुद्दे कहा जाता है, वे अलग-अलग तीन स्तरों से निकलने वाली सामाजिक माँगें हैं :

(अ) मुसलमानों की आबादी का एक बड़ा प्रतिशत ग़रीब और पिछड़े वर्गों का प्रतिनिधित्व करता है। इसीलिए जो समस्याएँ समाज के ग़रीब और पिछड़े वर्गों से जुड़ी हैं, वे मुसलमानों के भी एक बड़े तबक़े को प्रभावित करती हैं।

[6] http://www.bjp.org/about-the-party/philosophy/?u=integral-humanism#chapter3.
[7] http://www.bjpgujrat.org/english/philosophy.
[8] http://mp.gov.in/web/guest//impschemes.

13_hilal_muslim_Layout 1 5/1/2014 4:03 PM Page 170

भाजपा अपनी राष्ट्रीय छवि को सीधे-सीधे मुसलमान विरोधी नहीं बनाना चाहती। लेकिन यह नियम क्षेत्रीय भाजपा इकाइयों पर लागू नहीं होता। यही कारण है कि राज्यों में कई बार भाजपा कुछ अप्रत्याशित क़दम उठाती दिखती है।

(ब) मुसलमान धार्मिक अल्पसंख्यक भी हैं, इसलिए सिखों, ईसाइयों और बौद्ध धर्मावलम्बियों को धार्मिक अल्पसंख्यक होने के चलते जिन दुश्वारियों का सामना करना पड़ता है उन्हें मुसलमान भी अलग-अलग तरह से झेलते हैं।

(स) लेकिन कुछ ऐसे मुद्दे भी हैं जो सिर्फ़ मुसलमानों से ही जुड़े हैं। वक़्फ़ के नाम पर मसजिदों और क़ब्रिस्तानों के नियंत्रण का सवाल हो या फिर पाकिस्तानी/बांग्लादेशी समर्थक होने के आरोप हों, मुसलमानों को उनकी धार्मिक पहचान के कारण कुछ स्थापित पूर्वग्रहों का सामना करना पड़ता है।

मुसलमानों की राजनीतिक प्रतिक्रियाएँ क्षेत्रीय/स्थानीय स्तर पर बनने वाले इन तीनों तरह की माँगों के विविध समुच्चयों से तय होती रहती है। दूसरे शब्दों में कहें तो जाति, वर्ग और क्षेत्रीयता में लिपटी मुसलमान पहचान अपने आप को प्रादेशिक संदर्भों में ही व्यक्त करती है।

आँकड़े बताते हैं कि भाजपा राष्ट्रीय स्तर पर मुसलमानों कि पहली पसंद नहीं है। तालिका-1 के अनुसार 1991 में पार्टी को 6.5% मुसलमानों ने वोट दिया था जो 2004 में बढ़ कर 7% हो गया। लेकिन 2009 में इस मतदान प्रतिशत में 3 फ़ीसदी की गिरावट आयी और भाजपा को राष्ट्रीय स्तर पर मिलने वाला मुसलमान समर्थन घट कर 4% रह गया।

लेकिन तुलनात्मक रूप से देखें तो भाजपा का प्रदर्शन इतना ख़राब नहीं कहा जा सकता। 1999 में भाजपा और उसके सहयोगी दलों को कुल मिला कर 13.9% मुसलमान मत मिले थे और वे कांगेस के बाद मुसलमान वोटर की दूसरी राष्ट्रीय पसंद थे। 2004 में हालाँकि कांग्रेस के बाद सबसे ज़्यादा मुसलमान वोट समाजवादी पार्टी को मिले, लेकिन फिर भी भाजपा और उसके सहयोगी दल राष्ट्रीय स्तर पर मुसलमानों की तीसरी पसंद बन कर उभरे। 2009 में भाजपा और उसके सहयोगियों का प्रदर्शन सबसे ख़राब रहा और उनका मिला-जुला मुसलमान वोटिंग प्रतिशत घट कर मात्र 6% के आस पास पहुँच गया।

मुसलमानों और भाजपा के बीच के चुनावी रिश्ते की समग्रता समझने के लिए हमें राष्ट्रीय स्तर के इन आँकड़ों के बीच छिपी क्षेत्रीय विविधता से निकलना ज़रूरी है। इस विषय में दो राज्यों उत्तर प्रदेश और गुजरात की तुलना की जा सकती है। 2002 के गोधरा काण्ड और उसके बाद हुए मुसलमान विरोधी दंगों ने अयोध्या मसले को गुजरात के साथ सीधे जोड़ दिया। नरेंद्र मोदी का भाजपा के प्रधान मंत्री उम्मीदवार के रूप में उदय भी उग्र-गुजरात केंद्रित हिंदुत्व राजनीति से जुड़ा हुआ है।

तालिका-2 के आँकड़े दिलचस्प हैं। राज्यों में भाजपा को मिलने वाला मुसलमान समर्थन राष्ट्रीय स्तर की तस्वीर से काफ़ी अलग है। यहाँ तक कि उत्तर प्रदेश में भी भाजपा को मिलने वाले मुसलमान मत राष्ट्रीय आँकड़ों से भिन्न है। गुजरात के आँकड़े चौंकाने वाले हैं। यही वह राज्य है जहाँ 2002 में मुसलमानों के हर तबक़े को साम्प्रदायिक हिंसा का सामना करना पड़ा था। भाजपा के तत्कालीन मुख्य मंत्री नरेंद्र मोदी सहित क्षेत्रीय स्तर के कई बड़े भाजपा नेताओं पर दंगे को भड़काने या मुसलमान विरोधी हिंसा न रोकने के आरोप भी लगे थे। लेकिन दंगों के दो वर्ष बाद हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा को मिलने वाले मुसलमान मत 1999 के चुनाव की तुलना में तक़रीबन 3% बढ़ गये। हालाँकि

13_hilal_muslim_Layout 1 5/1/2014 4:03 PM Page 171

तालिका-1 : भाजपा को मिलने वाले मुसलमानों के मत (पिछले तीन लोकसभा चुनावों में)

लोकसभा चुनाव-वर्ष	1999	2004	2009
भाजपा को मिलने वाले मुसलमान मतों का प्रतिशत	6.5 %	7.0%	4%
भाजपा के सहयोगी दलों को मिलने वाले मुसलमान मतों का प्रतिशत	7.4%	4.2%	2.2%

स्रोत : सी.एस.डी.एस.-लोकनीति राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन 1999, 2004, 2009

2009 में भाजपा की स्थिति 2004 की तुलना में थोड़ी ख़राब हुई परंतु फिर भी गुजरात में मिलने वाला मुसलमान समर्थन राष्ट्रीय स्तर पर मिलने वाले मुसलमान समर्थन से कहीं बेहतर कहा जा सकता है।

गुजरात के इन आँकड़ों को नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता या उनके भारत का भावी प्रधानमंत्री बनने के सपने की सम्भावनाओं से जोड़ कर नहीं देखा जाना चाहिए। इन आँकड़ों के दो अन्य पक्ष भी हैं। पहला पक्ष राज्यों में बनने वाले राजनीतिक समीकरणों से सम्बद्ध है। पिछले एक दशक में उत्तर प्रदेश में बसपा और समाजवादी पार्टी कांग्रेस-भाजपा के विकल्प के रूप में उभरी है। इन दलों ने कांग्रेस के साथ साथ भाजपा को भी मिलने वाले मुसलमान वोटों को प्रभावित किया है। इसके विपरीत गुजरात में स्थिति अलग है। भाजपा ने राज्य में अपने आप को सबसे बड़े और प्रभावशाली दल के रूप में स्थापित किया है, जबकि कांग्रेस की स्थिति लगातार ख़राब हुई है। राज्य में क्षेत्रीय दलों का लगभग कोई अस्तित्व नहीं है। इसलिए यह कहना ग़लत न होगा कि दरअसल गुजरात में पिछले 15 वर्षों से राष्ट्रीय राजनीति क्षेत्रीय नियमों से खेली जाती रही है।

इन आँकड़ों का दूसरा पक्ष चुनावी विविधताओं से जुड़ा हुआ है। संसदीय प्रणाली में चुनाव के परिणाम निर्वाचन क्षेत्र में तय होते है। आम तौर मतदाता के लिए कुछ बेहद सीधे सवाल प्रासंगिक

तालिका-2 : राज्यों में भाजपा को मिलने वाले मुसलमान-वोट

लोकसभा चुनाव	उत्तर प्रदेश में भाजपा को मिलने वाले मुसलमान मत	गुजरात में भाजपा को मिलने वाले मुसलमान मत
1999	6.8%	15.8%
2004	2.5%	18.6%
2009	5%	12.4%

स्रोत : सी.एस.डी.एस.-लोकनीति राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन 1999, 2004, 2009

होते है : उम्मीदवार कौन-कौन है? उनकी सामाजिक-जातिगत स्थिति क्या है? उनमें से कौन किसके नज़दीक है? किसने किस तरह के जातिगत समीकरण बनाए हैं? स्थानीय मुद्दों के प्रति उम्मीदारों का रुझान कैसा है? वास्तव में राष्ट्रीय और प्रांतीय स्तर के राजनीतिक विमर्श इन सवालों में घुलमिल जाते हैं।

इस तथ्य को और स्पष्ट करने के लिए 2006 में हुए सी.एस.डी.एस.-लोकनीति के 'स्टेट ऑफ़ नेशन-मुसलमान सर्वे' के परिणामों का उल्लेख किया जा सकता है। यह सर्वेक्षण मुसलमानों पर

तुलनात्मक रूप से देखें तो भाजपा का प्रदर्शन इतना ख़राब नहीं कहा जा सकता। 1999 में भाजपा और उसके सहयोगी दलों को कुल मिला कर 13.9% मुसलमान मत मिले थे और वे कांग्रेस के बाद मुसलमान वोटर की दूसरी राष्ट्रीय पसंद थे।

केंद्रित था और राष्ट्रीय स्तर पर किया गया था। मुसलमान प्रतिभागियों से तथाकथित मुसलमान मुद्दों के साथ साथ उनके राजनीतिक रुझानों पर राय माँगी गयी थी। 69% लोगों की राय थी कि ग़रीबी और बेरोज़गारी उनके प्रमुख मुद्दे हैं जिनके आधार पर वे वोट देते हैं। बाबरी मसजिद पर उनकी राय मिली-जुली थी। 51% मुसलमानों का कहना था बाबरी मसजिद का मुद्दा उनकी राजनीतिक पसंद तय करने में अहम भूमिका निभाता है, जबकि 48% का मत था कि वे अब बाबरी मसजिद मुद्दे को उतना अहम नहीं मानते जितना पहले मानते थे। इस उदाहरण से साफ़ है कि एक सामान्य निर्वाचन क्षेत्र के मुसलमान मतदाताओं के लिए बाबरी मसजिद का सवाल मसजिद के दोबारा बनाने या न बनाने के रूप में नहीं आता। बल्कि बाबरी मसजिद, स्थानीय मुद्दों-सड़क, पानी, शिक्षा, और रोज़गार के साथ एक प्रतीक के रूप में जुड़ जाती है। ऐसी स्थिति में उम्मीदवार की स्थानीय लोकप्रियता उसकी पार्टी की राष्ट्रीय विचारधारा की तुलना में थोड़ा ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो जाती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है मुसलमान-भाजपा के बीच चुनावी गणित का ग्राफ़ राष्ट्रीय या प्रांतीय स्तर पर तय नहीं होता, बल्कि यह संबंध स्थानीय स्तर की पूर्ण जटिलताओं के साथ निर्मित होता है।

IV

आइए, अब उन तीन तर्कों पर लौटते हैं जिनका उल्लेख मैंने इस संक्षिप्त लेख की शुरुआत में किया था। भाजपा का साम्प्रदायिक चरित्र, भाजपा द्वारा अल्पसंख्यकों को मिलने वाले किसी भी तरह के विशेषाधिकारों का विरोध, और बाबरी मसजिद विध्वंस और गुजरात के 2002 वाले दंगों में भाजपा की भागीदारी। हमारी चर्चा से यह बात साफ़ है कि राष्ट्रीय विमर्श के ये मुद्दे निस्संदेह मुसलमान मतदाताओं को प्रभावित करते हैं। लेकिन इन मुद्दों से इस निष्कर्ष पर नहीं पहुँचा जा सकता कि मुसलमान और भाजपा के बीच कोई रिश्ता नहीं है या मुसलमान भाजपा को कोई विकल्प नहीं मानते। हमने यह भी पाया कि भाजपा की राष्ट्रीय स्तर पर कोई मुसलमान नीति नहीं है; लेकिन पार्टी इस सवाल पर अस्पष्टता बना कर रखना चाहती है ताकि उसके राजनीतिक कार्यक्षेत्र के विस्तार की सम्भावनाएँ समाप्त न हों। लेकिन स्थानीय स्तर पर ऐसा नहीं होता। इस स्तर पर राष्ट्रीय विमर्श स्थानीय अर्थों में परिभाषित होते हैं और कई बार ऐसे राजनीतिक समीकरणों को जन्म देते हैं जिनके लिए साम्प्रदायिकता बनाम सेकुलरवाद जैसी राष्ट्रीय बहसों में कोई स्थान नहीं होता। मेरा तर्क है कि भाजपा-मुसलमानों के संबंधों को ऊपर से नीचे की बजाय नीचे से ऊपर की दिशा में देखने कि ज़रूरत है ताकि मुसलमान पहचान की राजनीतिक बहुलता और भाजपा के बहुआयामी राजनीतिक चरित्र को रेखांकित किया जा सके।